Sarcouncil Journal of Arts and Literature

ISSN(Online): 2945-364X

Volume- 05| Issue- 01| 2026

Review Article **Received:** 01-12-2025 | **Accepted:** 25-12-2025 | **Published:** 09-01-2026

हरियाणा राज्य में महिलाओं की राजनीतिक भूमिका: चुनौतियाँ, कारक और समाधान

प्रीति रानी

राजनीति विज्ञान विभाग, देशभक्त यूनिवर्सिटी, मंडी गोबिंदगढ़, पंजाब (भारत)

Abstract: ***यह शोध–पत्र हरियाणा राज्य में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी की वास्तविक स्थिति, उससे जुड़ी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा संस्थागत चुनौतियों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय संविधान द्वारा समानता, स्वतंत्रता और प्रतिनिधित्व के अधिकार प्रदान किए जाने के बावजूद राजनीति में महिलाओं की भागीदारी आज भी अपेक्षाकृत सीमित बनी हुई है। विशेष रूप से हरियाणा जैसे राज्य में, जहाँ पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना, लैंगिक भेदभाव, परंपरागत मान्यताएँ और आर्थिक निर्भरता अधिक प्रभावी रही हैं, वहाँ महिलाओं के लिए राजनीति में सक्रिय और प्रभावी भूमिका निभाना एक कठिन कार्य रहा है।*** 1990 ***के बाद पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण लागू होने से उनकी संख्यात्मक भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि अवश्य हुई है, परंतु यह वृद्धि अधिकतर प्रतीकात्मक रही है। वास्तविक निर्णय–निर्माण, नेतृत्व और नीति–निर्धारण में महिलाओं की भूमिका अब भी सीमित दिखाई देती है। यह अध्ययन दर्शाता है कि सामाजिक सोच, पारिवारिक दबाव, शिक्षा और राजनीतिक जागरूकता की कमी, आर्थिक संसाधनों का अभाव, राजनीतिक दलों का पक्षपात, प्रशासनिक उदासीनता, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ और मीडिया की नकारात्मक भूमिका महिलाओं की राजनीतिक सशक्तिकरण की राह में प्रमुख अवरोध हैं। शोध–पत्र के अंतिम भाग में इन समस्याओं से निपटने हेतु ठोस और व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किए गए हैं, जिनके माध्यम से हरियाणा में महिलाओं को केवल प्रतिनिधित्व ही नहीं, बल्कि प्रभावी और स्वतंत्र राजनीतिक नेतृत्व प्रदान किया जा सकता है।***

Keywords: महिला, राजनीतिक भूमिका, चुनौतियाँ, समाधान.

INTRODUCTION

लोकतंत्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि समाज के सभी वर्गों को राजनीतिक निर्णय–निर्माण में समान भागीदारी का अवसर मिले। महिलाएँ किसी भी समाज की लगभग आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती हैं, किंतु ऐतिहासिक रूप से उन्हें राजनीति जैसे सार्वजनिक क्षेत्र से दूर रखा गया। भारत में स्वतंत्रता के बाद संविधान निर्माताओं ने महिलाओं को समान मताधिकार और राजनीतिक अधिकार प्रदान किए, परंतु सामाजिक संरचनाओं ने इन अधिकारों के पूर्ण उपयोग में अनेक बाधाएँ उत्पन्न कीं।

हरियाणा राज्य, जो अपनी कृषि आधारित अर्थव्यवस्था, वीरता और सांस्कृतिक परंपराओं के लिए जाना जाता है, वहीं लैंगिक असमानता, कन्या भ्रूण हत्या, कम महिला साक्षरता और पितृसत्तात्मक सोच के लिए भी चर्चा में रहा है। ऐसी परिस्थितियों में महिलाओं की राजनीतिक भूमिका को समझना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

1992 के 73वें और 74वें संविधान संशोधनों ने पंचायतों और नगर निकायों में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया। इससे हरियाणा में बड़ी संख्या में महिलाएँ सरपंच, पंच और वार्ड सदस्य बनीं। हालाँकि, यह संख्या–वृद्धि वास्तविक सशक्तिकरण में परिवर्तित नहीं हो सकी। आज भी अनेक महिला प्रतिनिधि प्रॉक्सी नेतृत्व तक सीमित हैं, जहाँ उनके स्थान पर पुरुष रिश्तेदार निर्णय लेते हैं।

यह शोध–पत्र इस बात का विश्लेषण करता है कि आखिर वे कौन–से कारक हैं जो हरियाणा में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को सीमित करते हैं और किन उपायों से इस स्थिति में सुधार किया जा सकता है।

सामाजिक–सांस्कृतिक चुनौतियाँ

पितृसत्तात्मक विचारधारा

हरियाणा की सामाजिक संरचना गहराई से पितृसत्तात्मक रही है। यहाँ परंपरागत रूप से पुरुष को परिवार और समाज का निर्णय–कर्ता माना जाता है, जबकि महिलाओं की भूमिका घरेलू कार्यों तक सीमित समझी जाती है। यह सोच महिलाओं के राजनीतिक जीवन को सीधे प्रभावित करती है।

- महिलाओं की नेतृत्व क्षमता पर संदेह किया जाता है
- सार्वजनिक मंचों पर बोलने वाली महिलाओं को आलोचना और उपहास का सामना करना पड़ता है
- पर्दा प्रथा और 'इज्जत' की अवधारणा महिलाओं की सार्वजनिक सक्रियता को सीमित करती है

राजनीति को आज भी "पुरुषों का क्षेत्र" माना जाता है, जिससे महिलाओं का आत्मविश्वास कमजोर पड़ता है।

पारिवारिक दबाव और सामाजिक अपेक्षाएँ

राजनीति में प्रवेश करने वाली महिलाओं को प्रायः परिवार से अपेक्षित सहयोग नहीं मिलता। उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे घर–गृहस्थी, बच्चों की देखभाल और सामाजिक मर्यादाओं का पालन प्राथमिकता से करें।

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

***Corresponding Author:** प्रीति रानी

DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.18189083

- देर रात बैठकों में भाग लेने पर आपत्ति
- चुनाव प्रचार में घर–घर जाने पर सामाजिक आलोचना
- पति या ससुराल पक्ष का दबाव

इन कारणों से महिलाएँ राजनीति को पूर्णकालिक करियर के रूप में अपनाने से हिचकिचाती हैं।

शिक्षा और राजनीतिक जागरूकता की कमी

शैक्षिक असमानता

हरियाणा में महिला साक्षरता दर पुरुषों की तुलना में कम रही है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं की संख्या सीमित होने के कारण वे नीति–निर्माण, कानून और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को समझने में पीछे रह जाती हैं।

राजनीतिक साक्षरता का अभाव

अनेक महिला प्रतिनिधियों को निम्नलिखित विषयों की पर्याप्त जानकारी नहीं होती:

- चुनाव प्रक्रिया और आचार संहिता
- पंचायत, विधानसभा और संसद की शक्तियाँ
- संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकार
- बजट, विकास योजनाएँ और सरकारी फंड का प्रबंधन

इस जानकारी के अभाव में वे प्रभावी निर्णय लेने में असमर्थ रहती हैं।

डिजिटल साक्षरता की समस्या

आज राजनीति तेजी से डिजिटल होती जा रही है। ई–गवर्नेंस, ऑनलाइन पोर्टल, सोशल मीडिया और डिजिटल प्रचार के युग में तकनीकी ज्ञान आवश्यक हो गया है। परंतु अधिकांश महिला प्रतिनिधि डिजिटल साधनों से परिचित नहीं हैं, जिससे वे आधुनिक राजनीतिक प्रक्रिया से कट जाती हैं।

आर्थिक निर्भरता

राजनीति में आर्थिक संसाधनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। चुनाव लड़ना, प्रचार करना और संगठन चलाना धन–साध्य प्रक्रिया है।

- चुनाव प्रचार का भारी खर्च
- पोस्टर, बैनर, वाहन और मीडिया प्रचार की लागत
- बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं की जानकारी का अभाव
- परिवार द्वारा आर्थिक सहयोग न मिलना

आर्थिक निर्भरता महिलाओं को पुरुषों पर आश्रित बनाती है और उनकी स्वतंत्र निर्णय–क्षमता को सीमित कर देती है।

राजनीतिक दलों की भूमिका और भेदभाव

टिकट वितरण में असमानता

राजनीतिक दल महिलाओं को अपेक्षाकृत कम टिकट देते हैं। यदि टिकट दिया भी जाता है तो अक्सर ऐसी सीटों पर जहाँ जीत की संभावना कम होती है।

नेतृत्व विकास का अभाव

दलों में महिला नेताओं के लिए प्रशिक्षण, मेंटरशिप और पदोन्नति की स्पष्ट नीति नहीं होती। निर्णय–प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी सीमित रहती है।

महिला मोर्चा तक सीमित भूमिका

महिलाओं को प्रायः महिला मोर्चा या सहायक भूमिकाओं तक सीमित कर दिया जाता है, जबकि मुख्य नीतिगत और रणनीतिक पदों पर पुरुषों का वर्चस्व बना रहता है।

सुरक्षा और सामाजिक भय

राजनीति में सक्रिय महिलाओं को अनेक प्रकार की असुरक्षाओं का सामना करना पड़ता है:

- चुनाव प्रचार के दौरान छेड़छाड़ और अभद्र व्यवहार
- राजनीतिक धमकी और दबाव
- सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग और चरित्र हनन
- रात्रिकालीन गतिविधियों में भाग लेने पर सामाजिक आलोचना

इन भय के कारण महिलाएँ राजनीति में खुलकर कार्य नहीं कर पातीं।

प्रॉक्सी प्रतिनिधित्व की समस्या

पंचायती राज व्यवस्था में आरक्षण के बाद महिलाओं की संख्या तो बढ़ी, परंतु कई स्थानों पर वे केवल नाम–मात्र की प्रतिनिधि बनकर रह गईं। वास्तविक निर्णय उनके पति, पिता या भाई लेते हैं।

यह स्थिति:

- महिला नेतृत्व के विकास को रोकती है
- लोकतंत्र की गुणवत्ता को कमजोर करती है
- भ्रष्टाचार और गलत निर्णयों के जोखिम बढ़ाती है

प्रशासनिक अड़चनें

महिला प्रतिनिधियों को प्रशासनिक स्तर पर भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है:

- अधिकारी उन्हें गंभीरता से नहीं लेते
- आवश्यक जानकारी और फाइलें समय पर नहीं दी जातीं
- ऑनलाइन पोर्टल और तकनीकी भाषा समझना कठिन होता है
- बजट और योजनाओं में पारदर्शिता का अभाव

इन कारणों से महिलाएँ प्रभावी शासन नहीं कर पातीं।

मीडिया की भूमिका

मीडिया का दृष्टिकोण भी महिलाओं की राजनीतिक छवि को प्रभावित करता है।

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher

- महिला नेताओं के कपड़ों, आवाज़ और निजी जीवन पर ध्यान
- उपलब्धियों को कम महत्व
- सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग और गलत सूचना

मीडिया को महिलाओं को गंभीर राजनीतिक नेतृत्व के रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

समाधान और सुझाव

सामाजिक स्वीकार्यता का निर्माण

- पंचायत और गाँव स्तर पर जागरूकता अभियान
- लैंगिक समानता पर सामुदायिक संवाद

शिक्षा और प्रशिक्षण

- राजनीतिक साक्षरता कार्यक्रम
- डिजिटल और प्रशासनिक प्रशिक्षण
- नेतृत्व विकास कार्यशालाएँ

आर्थिक सशक्तिकरण

- महिला उम्मीदवारों के लिए विशेष चुनावी कोष
- स्वयं सहायता समूहों को राजनीतिक रूप से सक्रिय करना

राजनीतिक सुधार

- टिकट वितरण में 33–50% प्रतिनिधित्व
- महिला नेताओं को मुख्य निर्णय–प्रक्रिया में शामिल करना

सुरक्षा उपाय

- महिला सुरक्षा प्रकोष्ठ
- ऑनलाइन उत्पीड़न रोकने के सख्त कानून

निष्कर्ष

हरियाणा में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि अवश्य हुई है, किंतु यह वृद्धि अभी तक **संख्यात्मक** स्तर तक ही सीमित है। वास्तविक सशक्तिकरण के लिए सामाजिक सोच में परिवर्तन, शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, राजनीतिक समर्थन, प्रशासनिक सहयोग और सुरक्षित वातावरण अनिवार्य हैं।

यदि सुझाए गए उपाय प्रभावी रूप से लागू किए जाते हैं, तो हरियाणा की महिलाएँ न केवल राजनीति में प्रवेश करेंगी, बल्कि सशक्त, स्वतंत्र और प्रभावी नेतृत्व प्रदान करेंगी। यह न केवल महिलाओं के लिए, बल्कि लोकतंत्र और समाज के समग्र विकास के लिए भी अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ

1. अनुराधा प्रसाद, रविशंकर कुमार चौधरी, ,महिला सशक्तीकरण - राजनीतिक सहभागिता के संदर्भ में : प्रकाशक: रीगल पब्लिकेशंस, (2016)
2. सोलेदाद आर्टिज़ प्रिलमन, महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी की पहेली, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा ऑनलाइन प्रकाशित: 30 नवंबर 2023
3. नीति आयोग — जेंडर इंडेक्स रिपोर्ट, 2024
4. UNESCO, UN Women — वैश्विक जेंडर रिपोर्टें,2022
5. **महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार।** *वार्षिक रिपोर्ट* (विभिन्न वर्ष)। नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, 2025
6. *विपिन सिंघल* , भारत में महिलाओं की राजनीति भागीदारी: एक विश्लेसनात्मक अध्ययन, प्रकाशक एसएसआरएन, (2014)
7. **शर्मा, कुसुम।** *भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण: चुनौतियाँ और संभावनाएँ।* जयपुर: साहित्य भवन, 2019।
8. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार — वार्षिक रिपोर्टें
9. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS)
10. https://www.google.com/search?q=india+and+haryana+map&sca_esv=1b465dddb89ef670&udm=2&sxsrf=AE3TifPMpL6QV-5V6v2BUfHE_ORbg7m_gg%3A1750693721206&ei=WXdZaKGwDJmKnesPsbm-OA&oq=India+and+haryana+&gs_lp=EgNpbWciEkluZGlhIGFuZCBoYXJ5YW5hICoCCAAyBRAAGIAEMgQQABgeSPFRUIoIWNM-cAF4AJABAJgBhgKgAagWqgEGMC4xNy4xuAEByAEA-AEBmAIToAK_GKgCCsICChAjGCcYyQIY6gLCAgcQIxgnGMkCwgIOEAAYgAQYsQMYgwEYigXCAgsQABiABBixAxiDAcICCBAAGIAEGLEDwgIGEAAYCBgemAMAkgcGMS4xNC40oAfCVLIHBjAuMTQuNLgHpBjCBwgyLTUuMTEuM8gH-gE&sclient=img#vhid=qfQKweDp2lKYjM&vssid=mosaic
11. https://www.google.com/search?q=kalpana+chawla+haryana&sca_esv=1b465dddb89ef670&udm=2&sxsrf=AE3TifPtSxa9XreE__lwX4v9YLGIUf33Eg%3A1750693741670&ei=bXdZaPTdKLzgseMP0vaamQI&oq=kalpana+&gs_lp=EgNpbWciCGthbHBhbmEgKgIIATINEAAYgAQYsQMYQxiKBTIKEAAYgAQYQxiKBTIIEAAYgAQYsQMyCBAAGIAEGLEDMgoQABiABBhDGIoFMgUQABiABDIOEAAYgAQYsQMYgwEYigUyCBAAGIAEGLEDMgUQABiABDIKEAAYgAQYQxiKBUilL1DSD1i5IXACeACQAQCYAYwBoAGhCKoBAzAuOLgBAcgBAPgBAZgCCqAClwmoAgrCAgoQIxgnGMkCGOoCwgIHECMYJxjJAsI

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher

CCxAAGIAEGLEDGIMBwgIEEAAYA5gDDpIHAzIuOKAHxS-yBwMwLji4B_QIwgcHMi00LjUuMcgHag&sclient=img

12. https://uniquepublishers.in/authors/anil-swarup/Encounters With Politicians

Source of support: Nil; **Conflict of interest:** Nil.

Cite this article as:
प्रीति रानी. "हरियाणा राज्य में महिलाओं की राजनीतिक भूमिका: चुनौतियाँ, कारक और समाधान." *Sarcouncil Journal of Arts and Literature* 5.1 (2026): pp 18-21.

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher